

न जा श्रुति मालि उ घोरो फूल को विच्छे उ धेरु फूल से न्यावाति ते रागुर ल जान श्रुती श्रु
जु जाइ न मरु मार सि रा जारा म चंदु की वाचा ॥ स स मंत्र ले तेल संत्रिष्ठ वा उ न मरु
मरु ॥ वाच का न व लेधु प म नु म मरु ॥ आ सा पुरि क धु प म नु म मरु ॥ ॥ अ
थ घोइ रा के उ पाइ ॥ ॥ स च अग्नि म नै मालु को पा नि सै म ला व नु को ते जा ॥ निष
र तु वा ला व नु को जा ॥ ॥ अथ दिव को उ पाइ ॥ ॥ पुर न सु वा ल व म ध नि
आ ग ड सै म नु पि न जा ॥ सि वा ति भा ग १ वा स क भा ग १ नि स भा ग १ अथ
त मा का ज रा भा ग १ तु र्गि म रि घा लु नु २ ता द क बा नु पि न जा ॥ ॥ अथ वा त को



2348

उपाय ॥ सुखतेल भाग १ सिंदूर भाग १ अरिड कोतेल भाग १ गार्दधि बु भाग १ सरदुहि सु
ल भाग ३ एति एक वग रि प काउनु मदि नगनु वात जा ॥ अरिड कोरा सुठो एक व
गरि कुटनु को खाहाडि से मनता तो गरनु जाहा दुष न्या ताहा लावनु अरिड कापा
त ले छोपनु तातो गरि क पराले काधनु वात जा ॥ सुठो तोला २ गार्दुध सेर १ ज
व आधा घटे न व सुठो धा मसा गर मगरि पीनु एक हर्ता का रो एक पा को स
द्विहान खानु त व विहान भाग वाइल मरि व मधे दि देवता क न विस आ
फु ले खानु गर मगरि वात जा ॥ दुध सेर २ अरिड तेल तोला २ सी सि ता ता पा नि सित

रस
१६

बानु चीसो पानि नकुनु वात कुट ॥ ॥ अथ क वलरोग को उपर ॥ तालु पाउ सिंठ
उ कोटु ध सिंठर ॥ ॥ वा मिसि लावुनु क वल जा ॥ संत्र ॥ ॐ अं वला कं वला दुइ वे
क्रि क वला ते रि अ वं लामे रि अरु का परै तो इ न्दर पार वति की ला व दु हाइ ॥ ॥ अ
थ अ नर स को उ पाइ ॥ ॥ सां भ रि न नर ला म्या भाग सा प का उ नु नी को हो ॥ वा
भो ज वा नु ए यो न न वा नु नी को हो ॥ ॥ ये सो रंगी या को वा वि यो पो लि पा नि
सैं पि या व नु नी को हो ॥ सो र र या ति पि या उ नु नी को हो ॥ ॥ ह ते दो पि या इ दि नु नी
नु नि को हो ॥ अथ अ को उ पाइ ॥ ॥ अथ मार्ग का ज रा को एस जिरो उ आ को सा

टो पानि का लाउ बुको बुदो एक जामा तताइ पिनु कि छु ले पगर्न बरो जा ॥ वलु
का जरा को रस दं हिं गा ला का जरा को रस अछाइ रति गे डि अछाइ मरि व बु
दास ग बानु बरो जा ॥ ॥ अथ ये ट सं ग्रह नि को ड पाइ ॥ ॥ मरि व भाग १ पिप
ला भाग १ सुठो भाग १ को रो भाग १ वाटु ल्या ता भाग १ मगी र ज भाग १ ज कानु भाग
सी धो भाग १ हरण भाग १ रति स म गरि पिस नु वस्त्र गति तगर्न विरा ता ५६
प्रमान बानु मंदा नि जा वायु गुल्म जा ॥ गह नि जा ॥ पेंट सुल जा ॥ ती त तैल से बानु वा
त पित्त जा ॥ अजि न जा ॥ गुड से बानु पित्त जा ॥ मधु से बानु अवि सार जा ॥ अथ मुसली

राम

१७

कल्पः॥ सुसति गत वात तिजरो जा॥ सुसति मधु वातु नित्य जरो जा॥ सुस
 ति विहि कटाहि वातु वेदसूत जा॥ सुसति म गीरा न वातु का सो उपसि जा॥
 सुसति दुध वातु इद्रि जाग॥ सुसति कोर वातु सिर वेधा छुट॥ सुसति मांग वा
 तात वायु जा॥ अथ मस्त्रे मरु परिकारः॥ सिंउ डि का टु पा मा विद्यातु न भरु
 मस्म गरु सो मस्म मागर ७ ठो भागर १ हिं वि मगर १ अक के ला भागर १ नक्ष
 गर १ पिपला भागर १ हति स म गर पि स न वस्त्र गति त गरु विरला ५५५ मर
 व वातु प्रीये जा॥ का सो उपसा से जा॥ वा य रो ग जा ॥ इ न रो ग जा ॥ अ जि न जा॥

राम.
१८

वायुगुल्मजा ॥ विषभाग १ सरिवभाग २ पिपलाभाग ३ सुठोभाग ४
भैसीकोष्ठभाग ५ एतीसंगपिसीडुभाकारससैषलगरिये
एतीरुभरषाद्वेकांसाउपसासोजासर्वरोगजा ॥ अशुलाकी
जराकोउपाइ ॥ गुर्जेसुठोउमालीषानुओलोजा ॥ अरिडकीजरी
कटाइकीजरिसुठोगुर्जेवीराइतोएतीउमालीपिउनुओलो
जा ॥ अरिडकीजरिवढरकीजरिसुठोएतीसमगरिपकाउनु
रसपिउनुओलोजा ॥ नहरुवा रोगकोउपाइ ॥ परेवाकोवृष्टिगु
उसैलगावेनहरुवाजा ॥ अथकेसकोउपाइ ॥ मोलकागनुपिसी

राम.
१९

कालिगाड का डध मिसिज माउनु मयि चिव तिनु भिं गीराज म्पाहा ते लघिव
से भैये के रास्सा हा हो ॥ संव बूर्ति र हरि ता लः एकै जागा के वानि से लावतु के
रा ३२ ॥ हरि ता ल पला ल को पात भु म्म गरि लावतु भस्म रुहं रुह ॥ अथवा
घ्या को उपाह ॥ वाघि नि को डध पि फाये नी को हो ॥ का फल को वो को का लाठी
ता को जरा पिसि मधु से लावतु वाघ्या नी को हो ॥ तिसना का जरा का ला निघु
रा का जरा से तिका मरि से लावतु नि को हो ॥ अथ दूर को उपाह ॥ ॥ कालि
विरा लिको मुंड आइत मंगल ज रा के अंजन गर्ज अष्टि होइ ॥ ॥ अथ गा

८३.

१८

उकोउपाइ ॥ ससुदुपुलं हरदिगाइधिवसगलावतु गाउसुक ॥ तिनवर्ष ॥ उपकोकोका
का नसाभागधनगोप्रातोला २ सुठोकोला २ मरिवतोला १ पिसि वेकाइसदि
नवातु गाउसुक ॥ सभका १ तु सिसोभातका चोदुधसिववातु २ कै जागरहुतु ॥
निष्प नद्धत्रसा अत्रलाका जठकंठि मावाधतु गाउसुक ॥ पिंजरकोकुल जरापी
सिगमगरिकंठि वाधतु तवमैं ४ बाका काठसेसेकतु गाउसुक ॥ अथगरुपा
रेकउपाइ ॥ सोराभाग ४ गंधकभाग १ असुतभाग १ तिनमिं नमिं नगरिपिस
तु तिनवरटेक जागाकैपिसतु पिपल पात्रिलेनापाएतु नरुहोये ॥ ॥ अथ

८३.

१८

आदि विना को मे हो गुरु निवने से हो आग्रज नि
 को को को मे गुरु कर का देन से आग्रज उ
 ५ ॥ अथ नावा मार उ उ पा ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

तोला

राम.
२०

उडि१ टिउर तोला १ दोरा पुष्प काजरा कोर स१ एतिप काइके मर्दन मनु राहु जा
गन जा ॥ वात जा ॥ सर्व नेथा जा ॥ ॥ अथ सोद कठ पाइ ॥ काइ फल तोला १ द
ल विनि तोला २ लवग तोला ३ सरिव तोला २ भांग तोला ४ अले वि तोला ४ ना
रि तेल तोला ५ मुसलिकंद तोला २ सभ ए कैवल्य गलित गनु. सेर ३ विनि दुध से
र ३ पकाइ पाग गनु. वरि कौंधनु. तिन सौ रुखा नु. थं भ न हो ॥ देह ताल हो. पुष्ट हो ॥
कास मि हो ॥ सर्व वेथा जा ॥ ॥ अथ दोहला कोउ पाइ ॥ ॥ वान वान गोर का श्री.
मगवान्. ए स मंत्र लेख लोछनु. की राहर ॥ अथ जने छटिरा कोउ पाइ ॥ ॥ वेलि.
का पात नउ निसे लावनु. नी को हो ॥ ॥ अथ रायनी कोउ पाइ ॥ ६ धि. हरि ना को

राम.
२०

जरी. लगाने कि छुपानि सैव का उनु. विद्या उ उ रा य न जा ॥ ८८ ॥ ता को अंतर्हीता. कुटिलता
ये. राय न नि को हो ॥ अथ पठानी क उ पाइ ॥ ॥ स्यात्ता तिल. मो था उ मो. वही वरि करि के
पुत्रा ये नी को हो ॥ गध क. सु पा रि. ज रा इ के. जा इ फूल. नी लो तु थो. गा इ क दु ध सै लगाना
इ ये. पठा नि जा ॥ अथ वे मे द क उ पाइ ॥ मंत्र ॥ ॐ धोर धोर आदि धोर अथ नो दि धो
र शिव धोर शक्ति धोर तै व जू ले सै पा नि. अथ म ह वि करे. सु वि करे. छ ल क
रे. छे मे द करे जो करे सो मो रे. कुरो मंत्र इ अतो वा वा ॥ ८९ ॥ मंत्र ले हु की ले सात
वे र मंत्र उ उ पु का उ उ मे द क पठ जा ॥ अथ व नू न मंत्र ॥ उ न नून कां हा उ प जे का

हा न उपजे सुगु उप जो क न आ यो क न न आ सो हे आ यो भद्र ला फुटि को द ला कु टि मे
ले मं न न न ली दे वे ॥ १ ॥ पुरुष ला गे पुरुष दे वे तो लि ला गे गा इ भ सि घो रि वा की
स म स रे ॥ न न म त्रि सु वा ५ नु ॥ अ व ह रि ना ठ को ५ पा इ ॥ ॥ ति ता वि ज क पा
त ह न घ स नु ह रि ना ठ जा ॥ मं न ॥ हि ग रि का ठ क क रि वि ला से दे मे दे ५ दु वे भा
इ मे हा रा वा घा मे रा रा श्री ह रि ना ठ गुरु सि द्धा व दे पा ५ ॥ स मं न ले पि गो म त्रि हा त घ स
नु ह रि ना ठ कु ट ॥ ॥ अ थ रा ज रो ग क ५ पा इ ॥ ॥ क पुर अ ठा इ म रि व क ट ह रा का सा त मं
रा पि स नु वा नु रा ज रो ग जा वि प ल को द्वा ला ज रा इ पा नि सा थ दि या ये अ य रो ग जा ॥

म.
२१

१ जंरो गजा ॥ अथ वोहा बुता लेकाया को उपाइ ॥ मेव ॥ ॐ साखे कुकुर मुख थोरै जासा कवि
या विसया चून पासा यिपिलुवारि मित्र ककरो मगारि ति का ति सिहि मद्धि नथ ॥ ससं
असे खाइ लघा उमाहाहे हात कै रारि आगी पा निन कुनु सौर विहान नारनु नि को हो ॥
अथ मसरसक उपाइ ॥ ॥ अठाइ मरिच मोरं पाहा दक्ष जिभा घसन नि को हो ॥ अंकार का
विद्या ककर का विद्या जिह अठाइ मरिच घसन किछु पुवा वनु नि को हो ॥ ॥ अथ अं
रि को उपाइ ॥ ॥ वाहु ल्या त्या को उबु नि घालनु गडे रि था क ॥ सिधो कहु ते लल
गाइ गडे रि था क ॥ ॥ अथ मुख का चाया क उपाइ ॥ मुसलिते लल गाइ नि को हो ॥ स

कतेल सरसिं ५ लगाये काया जाः ॥ ॥ अथ मुखगंध उपाह ॥ पुनर्नवी भाग
 १ विरजित्या भाग १ अरिउ किजरी भाग १५ धिला भाग १ राति सुषमा पात नुगे
 धजाः ॥ केसरि दाल विद्याव गारको पिव ॥ मगी रात्र तुकु निक्के चीनी ससेत पा
 नु मुखगंध जाः ॥ अथ कंठ आवे के उपाह ॥ वरी पिपला तेज पात सिंधो हेति
 वरावरि कै गत मा कोरि एष तु तव सुकाइ के खानु कंठ अथ ॥ कुष्ठिकु
 पाइ ॥ काला कुष्ठि सूर्य कुष्ठि चंद्र कुष्ठि वगारि कुष्ठि औषध ॥ विद्या न भा
 ग १ अत्रै फाल भाग १ घोरा कुष्ठि भाग २ एतिल गाइ ह्येत कुष्ठि जा ॥ अत्रै

८५.

२२

१
लभागा१ मरिचभागा२ चिताभागा३ वोहोभागा४ सुठोभागा५ पतिसिसिकाजिसैलगाये
सेतकुष्ठिजाः॥ ॥ अथ वध्यकउपाइ ॥ ॥ कदोलाकापातएकै सवेर गमके वउहरका
वीया मरिच साधके पियाइतोयेट गोठि ररः॥ मुरयिकाबुनाकोहोलसे प्रठाइम
रिचलगदनीसुफारि घालिपकाइ कोटाप्रमानगरि पेठगोठि ससः॥ अथपा
चकउपाइ ॥ ॥ वीपरीतोला१६ पावलजरितोला१६ धनिआतोला१६ कालेजिरातोला१६
सिंधोतोला१६ अथ अनरसकोउपाई ॥ विषमादुकुणवारषातनीकोहो ॥ वाबुवी
लाका कुटुकादेवै पातिके पात मिजिके रस पियावैनीकोहो ॥ अथ मंडबटिरा
केउपाइ ॥ पातिकेरसपियावै उन्नको भस्मके मदनकरैनीकोहो ॥ अनर्घावके बटिरा

खोलि पाके ॥ इटहला के सुवाइव कुनिकरी के आगे तिल तेल घालि पाके वकुनि दिनु नि को हो ॥
 अथ आला पात्र के ॥ फूँकिरी बुर्न गरी घाव मा हात नु नी को हो ॥ सिं ५ डि के दु धल गावे ॥ ५ धि
 के दु धल गावे नी को हो ॥ ॥ ७ नि प्रल के ५ पाइ ॥ ॥ जिना ७ ती को उ कु नि ॥ चि ५ डि मरि वावे
 दिन ७ नि को हो ॥ अथ अल के ॥ चिता कि जरी वकुनि गरि गाइ धि व मे ल पे टि सिं ४ डि
 प्रमान खावे दिन ७ वा १४ वा १९ नि को हो ॥ अथ सिं ५ डि के ॥ नि मल गावे वा चूकल
 गावे वा तये लगये वा मरि बल गाये वा सुठि पिसि के लगये वा वा दु ल्या पापी
 सि के लगये माथ से नी को हो ॥ असु एक मटा १६ सार आनी के पा नि मे का थ गरि पका
 वे संठा प्रालि ^{पासी} प्रात खावे दिन ७ रू दि विधी ओ ल के क एक मि जाइ ॥ ॥ ७ नि अल के ॥

रम.

२३

एक एक व कुवेर किंति भू संशत त्रयं ॥ किं पुनर्लभ नोये तर्हि गुडो घवना गैरे ॥ कुवेर किंति
सुनहिं गु सिंधो सुठि सम गति पिसि कै वैर प्रमान गोति बाध नु प्रात वा वै दिन २ का
२१ शत भुल जा ॥ धातु परे का ॥ ॥ पि प ल क्रि सं वर छा ला जिन गु र जा व लु थोर कुटि
कों भुय के आ व दिनु पथर मे र सि कै जो पार पथर मे रै सो एक न गरि कै बाउ से का
वै दिन २ का १४ वा र नी को हो ॥ ॥ षठा इ वा थ र न का इ ये ॥ अथ प्र मे ह का ॥ काला उष
को उदो ल पे टि के दधि का वै तो नी को हो ॥ अथ सो पाय का ॥ वडे दु धि ला के लता सुका
इ वूर्ण गरि अ न सो उ वा वै पु ष हो ॥ ओ गु जी सो औ छ ति व न सो बाध कुटे अ वा

२४

कर ना के लीतों ॥ ॥ रवि भौम के दिन काला साप मारि दे. ओछ जा गा मे साप से लं. वा की ला
गा ठिये किला ॥ ५ ॥ आठि के ताहा साप का लिये. सर्प का मुष मा मा दिस मेत. विविंश को वि-
जया लिये. ॥ ५ ॥ पर माटि दिजिये. जव फलै तो. एक फल पाविये. ओर फल डुर करै जवण
कै. तव विजले के. धरी पाषे. खिके संग मै मुहुं मै पाविये. तव तिंग विविंश के फल व
रावरि होवे. स्थं मन होवै ॥ ॥ अथ कौतुक विंता मरौ ॥ ॥ पुष्ये पुष्य तु संक्रांतां भरणीं तु पू-
रुषं तथा ॥ श्रावणे वदिते श्रावणं हस्ते पत्रं तथैव च ॥ भूले भूलं समुद्रं त्रुल्लो मत्तस्य
तत्कमात् ॥ पिष्टा कपूरं संयुक्तं कुंकुमं ते च न संसं ॥ तिले के ली वंशं काति यदि सांतां दं धु-
ति ॥ इन्द्र वाहरी का भूतं पूष्ये नमसमुद्धरेत् ॥ कुटुंबये र्वासी रेः पिष्टा तद्गोल की कृतं ॥
वेद ने न स मा युक्तं तिल कं ली व सं भवेत् ॥ भुत नं तु लसी मूलं तां तु लेः सह भक्षयेत् ॥ नमं च

तिनरोवीर्थकर्वेके नरथकृपक॥ श्वेतांकरंजमूलं तु जले न सघर्षयेत्॥ विभूत्पासं पुतं
 नित्यं तिके लोकवस्पृक्त॥ अथ नामर्दमर्दहोवै॥ तो गार्कागर्दका विभूति कदि आ
 कक्राधुधको अष्टोत्तरसतपुटदिउरुवामि श्रीतगरिमार्दिको वासनगर्नु ताहा माघालि
 संपुटदिउकाउतमित्र गर्दकासमधमारावि पकाउत मोलिवेरकाउत वावलभ
 रिकानुदिन ७ वा १४ वा २१ पुहसशक्ति होइ॥ बुढातहरागहोवै वायुहरे अन्नवृत्तका
 वै वारनावारियो होवो तो पानसातकावै॥ अथ वरुके॥ ॥ वाउमरिचर्वंड अलै वि कवाय
 चिनी जीरो अवलिसाके जरी पानिसौ पिसिक परका न करी पियाको नीको हो॥ विसो
 नर्दके तेल वामे अफिम छेरिके दुध मिलाइ के लगावै नि को हो॥ अथ दोषवतके॥ पेरे
 कावे अंड वाकुपुएके अंड थोरदिन कषो विवै इंदिय घालि उतारु तो नीको हो॥ औजेहि

रम.

२५

खीसोंसंगकरिअथाभइतेखिकेतघुपियावेतुरंतुनिकोहोइ॥नमरैअडकसौप्रातषावेपितहरे
ननमरिचप्रातषावेवायुहरेअदुषखितासैधरैदसमगरिमेतहुभाइ॥प्रातप्रातयोनरवाइ
वातपित्तकफदुरजाइ॥दिन७उपरनवाइयेवंत॥आकवीजलोहडाहतमैषरकरिकोभइ
जवचूर्नकरीतिलतेलसगलगवेतुतोनीकोहो॥औभेआकुहोकापातरसलगवेनीको
हो॥वरिअमितिकरसलगवेनीकोहो॥अथसालनफुरैका॥तिताविंटाकेजेरो
काकासूतकांधिधूपगरिओषधधुविलिदिसापारिकटिकाधुवफुरै॥॥अथवाधाके॥
जीनाकुमिंटाकोगुदिबुवाउनुकारसपिप्राउनुनिकोहो॥॥अथफुरैजिभाके॥मिडा
ककाठकेअग्रिसेपोलतषरनिलावेनीकोहो॥अथधातपरेकादिचके॥कालातिल

आंधा चावल काला उषको वर्ध ५७ परको गुडः प्रातः कि बोवे दिन ७ वा १४ वा २१ प्र
हो ३ ॥ अथ वेगके उ पतलिके ॥ नागकेशरके पुलवा पानिसे पिसि क परधान
गरि पियावे नीको हो ॥ अथ उद्यालके ॥ सिंधा भाग ३ गाइ धिवसा भुजिके का
ला गरि प्रातः दिन ७ वावे नि को हो ॥ अथ वज्रकारके ॥ मैसिका संघ गुईठा के विभू
तिकरि क परधान करि पोला क कोठा कार सहे गोति वा धनु अग्नि मे ताल गरि
जरार सितल गरि फोरनु सिवालिका पात काला धनु रा का पात चिता के मूल पत्र
इन तिन के रस मे भिन्न भिन्न के तीन बार ओहि विधि से पकाइ राखनु ता ता गही
सर्वो गले पगर्त अल वा पुजा ॥ अन्य वा पुजा सर्व वा पुजा ॥ पुन अजिन के अंन

रसके ॥ मूठि १ नूनपा निमै पकाइ के गरमि पिपावे निको हो ॥ पेठलागे का ॥ विजया
का मंटा ७ अरिउ के मंटा ७ साभि नूननठिका ७ एकम के पुर्त घालि पिप्पि अ वला प्र
माणा गो लिवा धिषानु दिन ३ वा ७ बाइनी को हो ॥ कायुसूल के ॥ मूठि ५ जवानु
भुटि के ठेनु वार भरि विजया घालि चूर्ण गरि चुकुटि प्रमान सांरु वावे निको हो ॥
अथ नाथो प्रुटे का ॥ नासिका मूल मै पट वर के वाता दिजे निको हो ॥ अथ पेठ कायु
के ॥ त्रिकुटु सुठो पिपता सरिचु तिन वरा वरि गरि प्रत पे सा भरि गाइ धि व
र ७ इफानी घालि पकावतु चुकुटि भरि चूर्ण घालि पकावतु ७ तारिये वस एडु ना
मा घालि पिपावतु दिन ७ ॥ ४ ॥ २ ॥ निको हो ॥ अथ जुका के ॥ काले जिरो चूर्ण गरि पि

सुतः समस्ता प्रमान गोलि सुत नीतनु दिन ७ नीको हो ॥ अथ घा ७ रगत धाम न्याके ॥ कल्लरि
कालिकै वा ७ एका कोरे मघालिकै वा कोदका रे मघालिकै धामे ॥ अथ दधि वा ७ मंदा मि होत
दधि वा वै ॥ अथ सर्व मंदा मि के ॥ भात वे माइ ताता गरि वा वै नीको हो ॥ अथ नूता के ॥ रैये
छारि नून अमिलो धै सो गरका महि मा वि सि मा टा का वा सन मा हा लि भूर्य पाक गरि
धोइ के न ला ७ नु दिन ३ वा ७ नीको हो ॥ अथ काहु लि के ॥ जाइ फल अव का कोइ ला पुठ
उ सु वा ति न रे कै गरि पुठ उ विजया मधु से गो ली वा धि वा नु दिन ७ नीको हो ॥ पुन नूता
के ॥ मेडिको घिव से ले प करै मनुष्य पशु इत्यादि क मि रं ग्यादि सर्व वटि दूजा ॥ अथ हरि ना
इ के ॥ लाम पा त्या व लू को पात पि लि कै ले प करै दिन ७ नीको हो ॥ अथ मि रं गि आदि सर्व वटि रा के ॥
घाटु के ॥ उप मार्ग के वलु बे शिव लि गि के इ कार को मूल त्या इ भु का इ धु तो गरि का ठ फलि वरा वरि ग

१८

२७

जुम्लमेवव॥ स्वविष्येणतिलकं कृष्णं त्रैलोक्यं वसमानयेत् ॥ ॥ अथ लतादि ॥
दिह रिदुश्च मंजीवा गृहे धूस विषमथा ॥ लतकं वृश्चिक कन्या सर्वे वां दारवुष्टकं ॥
विना सनं त्रिबकुलं लालवुष्ट सूर्यकुलं वेदवुष्टं सवदिबुष्टं एतेबुष्ट विना लये
तु ॥ सिउडि केरु धल गावे तो पिरं ग्या दि सर्व वटि तथा क निको हो ॥ संदेह नासी ॥
अथ जनावर के ओष्ठ ॥ वरियार के जरि ह गानी भरि ॥ ओमि मिया इस्कर मरि
ओवर ओक फुलद मरि भरि ॥ ओल वंगद मरि भरि ॥ सममिसार के वरि वाध बवे
जनावर के होला प्रमान देवै ॥ ओछोटे जनावर के देवै ॥ दिह प्रमान जव कानि होत्रे अ
ठावे त वदेवै निको हो ॥ जे जनावर जे व मास ता मा अठावै ते कह भेस से निक पूर के

घोर देवै वंजना वर केरति २ छोटे केरति देव नी को हो ॥ जे जना वर लंजर होइ दे रि
 कूध देव नी को हो ॥ तामा साधि देव तो एहि न नि की होइ तो दे रि कूध देव नी को हो ॥ जे
 दे रि कूध देव नी को हो ॥ जे सु न नी को होइ तो कूरि देव एहि नी को होइ अवस्य ॥ जे ज
 ना व से आ वि फू लि परि तै तक रा के ओ थ ध ॥ सि रि के वि या सि हर चू रि वो धा मे ला न
 र व आ वि मा हा ला इ नी को हो ॥ का ज वा सा के मुख ॥ मि श्री सु वा ग प का इ के ज ना व र के
 मा सा १ छोटे केरति १ देवै मुख लागै ॥ जे ज ना के अ वि या सद त होइ तक रा के मि मा इ
 ति २ ओ त रे दि न दे व ॥ छोटे ज ना व र केरति २ देव नि के मि ल इ ति स न नि कू से ॥
 जे ज ना व र के र गत हो गे ते क रा के गा इ क न व नि स के तर रा य धो १ से तामा से वि य न

[illegible]

HE
· 52

[The manuscript page contains approximately 8-9 lines of handwritten text in Devanagari script.]

ननिक होइ तैं पिछो क दी ल देव ॥ एह ननिक होइ सु सठ के तामा देव एह नी ज वै ता गो सक तामा
देव ॥ ॥ इति ज नावर ओषध समाप्त ॥ ॥ अथाथ ओषध म्या ॥ ॥ गुरु वि कटाड छाड टा गो सु
च अरु स सगु न व व कुटु कि तेतुरंग क नारे उ जानि ॥ सेंध व बूट माजू व च हिति निकटु ते
सर्व हि वात विकार पितुरंग म देउ ॥ ओषधि परि सुठि मरि च शुका स भठे बुवा भरि लेह ॥ चित
निकटु मेरै कै दारि मरि गु व तु कार ॥ चोई गिनि भय जं भय मंदा गि उप चार ॥ ॥ मंदा गि क ओ
षधि ॥ ठे बुवा भरि भरि स भ लेव चित्त ती नी कटु मेरै सेंध सेंध व सरा संयुक्त चोई अग्नि भय जं भ
य चतुर कार न मि युक्त ॥ ससयै पाव ओ गोरु पाव भरि ॥ अरि उ के जरि पाव भरि गह पुरणा
के जरि पाव भरि गुरि चि पाव भरि धन ब हो पाव भरि सुठि तात पानि सै स भ साध व दि

न० देव ॥ जौं हसि चोहै वै तौं स्वर्ग हि दीन आधा लेव ॥ कसि जि रि टाक ३ हरि ताल ठाकार पा
 न के र ग टाक ३ घोर के दांत हरि वै पावक घोर कि ॥ हर ग सेर ६ गाइ वे द हि सेर ४ सर सिं का
 वि सेर ४ नून सेर १ सँ हि जन के छाता सेर ३ सजि वार डेवु का चार भरि ज वा वार डेवु का ४
 सिधा नून डेवु का १० पि-पा नून डेवु का ५ क र वा ते ल से दू १ कै व ना वै कै ज
 त ना हारे उ सिन व वि का नि कार व छा त ले कै पि सव ओहि पा नि का चि सर सों पि सव ओ
 व ध पि सव स्व टा उ कर व ओ म टा रि के घा मै रा व दि न १ उ परां त उ पर क व नित्य ना हरि
 के साथ देव डेवु का २ नित्य देव ॥ ओ व ध व र गि क र व ॥ सा भ न पा व भरि १ व रि नून पा व भरि
 १ सा जि वार पा व भरि १ ग रि पा व भरि १ सँ ध व पा व भरि १ ज वा नि पा व भरि १ म रू वौ जा ठो ४ फे

नम-
 ३७

क व स् क ठा उ कर व पै सा चार चार रोज रोज देव ॥ औषध लंघ के ॥ लसू न पाव भरि सा
वन पाव भरि हरि पाव भरि वायु विडंग पाव भरि सा जि पाव भरि सिंघि पाव भरि ति
ल के तेल वा तिसि के तेल सेर १ निम के पा नि पि तिले व छा नि अग्नि पाक गरि तेल
उर व वरु रि तेल क प क रु भये सो त व स भ औषध उरि दे व प का इ उ तार व न व से फि रिला इ व
व डि वेर ला इ म लि दु म के जत न करि क परा से ल पे ट व दु म प न प रै ॥ औषध कम को रे के ॥
अज वा नि सेर १ सा जि सेर १ म यि न फल टोर ५ नून से ५ क रिका के पि सा प सेर आ धा म ह ला इ
के १७ व व द ना सा थ दे व औ ना हा रि के द ना सा थ दे व ॥ औषध मुंजे के ॥ गार धि व वा
मे डि का ते हि सा हा स् क फा हा भै वे स् क फा हा म द र के दु घ भै वे सु मा इ पे ले धि व लि पा

हादेइ ताहि उपर आरु कि फाहो देइ औ आकके पातु होइ ४ ग मँके उपर देइ तहि पर व पर कि
 पहिसे बाधे तीन दिन राखै तिसर दिन कोले निको हो ॥ इति घोर के ओ **४५** समाप्त ॥ ॥
 धन्यंतर येन म ॥ **अथ** मानुष के ॥ हरी वरी अमला मरिच पिप्पला सौंठि विता जवा
 नि जिरा हिंगु सिंघो सोंचला गुर्जी कोको **॥** इति चतुर्दस ओषध चरावरि गरिचूर्न
 गरिक पछाना गरि विरालापद प्रमान ताता पा नि शात पातु सर्व कायु हरे अजिर्न हरे
 का सो उपसा सो हरे सर्व शु त हरे पेट कि त हरे भूष लागे चूर्णा ना सकरे ॥ **अथ** रातु वस
 मंत्र ॥ ऐं नमो भगवति कार्तिके २ बार ह सुधि २ अंधे अंधि न्ये नमः हं धे हं धि न्ये नमः
 मोहे मोहि न्ये नमः सं मे सं भी न्ये नमः अमुकं सं भय सं भय सर्व दुष्टा नां सर्व जि हा

संभुं कुं २१ की पुं वत्पुं कुं २२ ॥ अथ काथा कल्प ॥ धनेश्वर के त्रे पारिकाला को कां धो हा
त का धनुः धार वेध होइ ॥ उन्नरन के त्रे ज्यो वीर को कां धो वा धे स्त्री वत्प होइ ॥ रेवती
नक्षत्र माः बेल को कां धो वा धे जनपिती होइ ॥ शुभ्रिनी नक्षत्रः जव
को वा धेः सं ग्राम मा धा वन लागे ॥ भरणीः पलास को एक वन्धी गाइ को
दुइ सेः रितु काल माः पुवा नु वा निरुद्धी को पुत्र होइ ॥ सुवर्न सौः आव को
वा धो हरि पी ची सो दिनु वं ध्या प्रसव होइ ॥ कृतिकोः पां पा डुरि को वोर
भय न होइ ॥ मघा पांः शुगति रुक्ष को अ न रा वि ये अत्र वृद्धि हाइ ॥ म
ले सिवा जी अत्र वृद्धि होइ ॥ मृग सिरा पां दुं मि कोः मन सा वि ती त फ

ल होइ ॥ **पुर्व काल** नयां दहि गाला स ज प्रीती होइ ॥ **स्वाति** लोचु को
मन साविंती त फल होइ ॥ **विस्वा** या कां कनेर को वंध मुक्त होइ ॥ **जेष्टा**
यां ज्वासीर को दुर्जन सुजन होइ ॥ **पुनर्मूल** भे कां स को वहु द्रव्य होइ
रशी **वाधा** कल्प ॥ भला के १ विद्या च नर कमली निपात र सति स भ पो सि
भस्म गरि पि सनु क विडा कार स से लिग लेप गर्नु पै रे मै सि को गोवर लावनु
लिग मोठो हो वहुत दृढ होइ ॥ गुधार गानु कुटि पिठो गर्नु सुका उनु सह घी व के
साथ गानु अर्को गुधार गानु लावनु कुटि र स काठनु श्री हिर स मा मि जा उनु स

हृदयवसासाथगरिकानुदसत्वीसहोइ॥अथा॥मिउठेका॥रगतलगावै॥अपिसतगावै॥
पठिकाअउकोरिसतगावै॥गोवरलगावै॥विषयसिलगावै॥दुरासानिविसिलगावै॥
उनिआभाजरकुटिलगावै॥पातात्कालनिकहो॥पावैतोतलकोबुद्धुनितिलतेल
सैलगावैनीकोहो॥महाज्वरकुश॥सुठो॥पिप्पला॥सरिच॥टक्कप्रमान॥गंधक॥
विष॥फार॥टक्कप्रमाणगोलिपातउठिसर॥आदेकेपालि॥ताप॥पित्त॥कफ॥वातकोना
सहोइ॥तआल॥तिजरोहिजरो॥नित्पाजयेचाउथोजरजा॥सुषम॥विषम॥सीत
ज्वरउदरज्वर॥जोवै॥अथमदनप्रकासकर्म॥तालमघाना॥मुश्लिकंद॥सुठोगो
रुरकोछा॥किविज॥असगंधसेमलफूससुपमेलाइ॥कालासेतारसुचसु॥जल

सहि मिलाइ ॥ हे रिड धसै पीजे बहु सिवार मे निधान ॥ अथ ते लयंत्रके ॥ मा
लका गुनितेर १ अतुर का बीज सेर १ चकोर का विज सेर १ कनेर का वि
ज सेर १ पाच वस्तु मिलाइ पाताल यंत्र से तेल का ठना ॥ सोही ते औधा
चाबोल प्रमाण वर का अठार पात लगाइ यावे वायु सवरी रे दिन १
का १४ का ११ पान का विण सौ हरि ले ज यावे ॥ जू दिन व्यापि भूषला मे का मष्ट
होइ ॥ ब्रूत गुन पावे ॥ अथ बंधक के ॥ अकर्व एतु ठि ॥ कु विला ते लिया जाइ
पूल स मगरि चूर्ण गरिते हिते लसे मरि व प्रमान गो लिका धै सारु यावे वा

रम
४१

ये विवेकि कुन बावे सीतल गरि कावे सी सं ग करे. छटाइ काइवी क्यं करे ॥ अथ
रिसाह सा वायु गोला के ॥ ५७ ॥ कर स. आधा पाक करव. घेला मै घालि. कुमिं डके
विजडुर करि. चान का टिकेत सुता सेर मै घाले घेला के मुष मुद करे दिन २१ जत न क
रि सख वछा पावी सुकान करे पुनि दिन २१ एक एक वाना बावे नीक होइ ॥ पुन वी पु
गोला के ॥ ॥ सिंधो. वि. त्या. सा मरि. पा गा नून. सरि च. पी प्य लि. एक एक पेसा भरी
चूर्न गरि के आना पा का फल मितर करे दिन ७ धरि रावे. पुनि ७ त बंड गरि दिन ७
बावे नीको हो ॥ अथ उपसा सा के ॥ जव का आटा. वा. महुवा का आटा. वारि

नूनः सिंउंउ केदुध आधा आधा तिन वल्लू क जा गा कै से टि करव आगि के नै कट
 सुखावै प्रकि जावै पोले म ति दीन राखावै नि को हो ॥ फल छइ जा ॥ अथ रक्त क्षप
 के ॥ छेरि के मूत्र ओट वकला करव धरि ए खव पुनिका चाके ए पो लि के त सु मे ल
 पेट एक के ट हरि ते ज प्रात दिन २ खावै निक होइ ॥ अथ रक्त परेका ॥ अथ रक्त
 का अंत की ला सुकाइ उकु नि गरि डाडा समेत वैर प्रमान गो लि वाधनु प्रात दिन ३ वा
 खावै नि को हो ॥ अथ हर्ष के ॥ सरस सु पारि धो ए पो लि के त से के तोल पु रा उ विजया ले
 रु सरस ति न ल वं ग ले रु ए ति स भ मि श्री त गरि र्नु र्नु म धु से ति न गो लि व
 ए वरि वाधनु प्रात दिन ३ वा नु नि को हो ॥ पुनि बल हला के ॥ छे हरा वि नि स म ग

रि कानुनि को हो परे का कि रूषी चून गरि क प र्छी न गर्नु माना १ माना १ चोला निसग
मुटि १ ओ यदि कानुनि को हो ॥ हो र या को मा सु प का इ तात तात गरि के पिया वे निका
हो ॥ अथ पि ला के ॥ पि ला उठते मे अठाइ जे ठा मरि व धु का से म धिल गा वों न को हो ॥ पुनिस
ल न फू के का ॥ को ने उ पाइ साल न फू के तो अ हो र वि म री व का ते र कि ये दिन ७ का १० ग सि
ग लि व से गो न मा ते न मु वै गो नी क होइ ॥ टि मुर को तु तो प सु ति रु नि वि ति के बु का उ नु सा
ल न मा ते मै हा नी न र हो स प नि सं दे ह ना सि ॥ अथ यो पा द के ॥ ए क गे जे भ ला यो सु
हो गे डो भा ग १ काला तिल स म गरि मा इ ला इ पु का व नु नी को होइ ॥ ती ज रा
के ॥ क ह न ध तु रा के जी ना पा त म च्ये न सा कारि छोट मो ट करि हा त मे

मिजी के चीली मरकतमा पुप्रमान राषेत हिम ध्ये सि उडि पुमान हा ली के
सुकों जे र आवै आदि लवा ह भौम का एदिन आफने हात की सक मुष मे डारि दि
जो दंत पूर्व करिके पिछे सीतल भात थावे ओष चषा ये पिछे प्रहर कि कु
सं कुतन करिये लरिपो वरुत नी कहोइ ॥ ती जरो कुट ॥ दो सरा का सक
पुल का पुल के अंत छीला मरि व स म गरि व न गनु ज्वर के दि न प्रात त्रिकु टि पुमान
का सि पा नि से दिन ७ घरि २ पिछे सीत भात थावे काइ दधि से काइ ति जरा जाडा
हाउ पुटे का ॥ मे ल हरा के अंत छाला पि सि के वरुत करि ल गावे बत्त ल पे टि ल
के अंत छाल से काध व ति न ति न दिन से प्रेरव रायि ये दिन ७ का १४ हाउ पुटत

रम

४३

जो दिवे कर क जाइ नि को हो ॥ अथ जल गह के ॥ हर ड वर ड अमला सम गरि थो
राथि वि गो सुन मै प काइ अकाव लेख करि क पछी न गरि थो ह तात के पात दि
न काइ ये जल गह नि को हो ॥ सल ह ले र १ भवा मि तो ले र १ चूर्न गरि गाइ धि व से
स गावे दिन २ १ रंग न छुटे ॥ हर ड १ र के गु दि आठ म रि च पि प ला ४ चूर्न गरि अ
मला के र स मै प काइ ल वे ने चां ज न कै रे ज १ ने व नि र्म ल व रै यो ज न १ प
मान ठ ह रै ॥ चि ता का जि ना पात भु काइ चूर्न गरि गाइ धि व ल गाइ अग्नि ता
प करै दिन २ १ रंग न जाइ ॥ ले म को इ ल वे ॥ अत्रै फल को फल को टिल गावे

नि को हो ॥ अथ मुरालि फल ॥ मुरालि कंद गाइ के दूध मे पकाइ पूर अखा
 वै भाग १ लवंग भाग १ गाइ फल भाग १ मरिच भाग ४ पिप्पलि भाग ३
 कुठि भाग ३ मुरालि चूर्ण गरि मधु से कावे मिरंजि जा ॥ मुरालि गोम
 व से सुकावे दिन २ ज्वर जा ॥ मुरालि भेडा के जेल से दिजे क म ल व
 मु जा ॥ मुरालि फा नि से दिजे अधा सि जा ॥ मुरालि फा नि से दिजे तीज
 र जा ॥ मुरालि लवंग से दिजे का सि जा ॥ मुरालि चूत ले दिजे इन्द्रि जा
 ॥ मुरालि लसुन से कावे कंठ श्वर होइ ॥ मुरालि मग की वि से कावे
 मो नि कंठ क था के ॥ मुरालि अडक से कावे वात शूल जा ॥ औ का सि फ

निसे षावै भ्रल जा ॥ मुरा लि जा मु ना के र स से दि जे पे र क जाइ ॥ मृ गि जाइ ॥
मुरा लि नून से षावै भूष लागे ॥ मुरा लि पे उ से ता ता पा नि से षावै कारि के फु
ल लागे ॥ मुरा लि त्रि कु टा से षावै वेटर क जावै ॥ मुरा लि मधु से षावै गड
दे ग जा ॥ मुरा लि गंध क से षावै र तो जी जा ॥ पुन वंधी र नि नी को हो ॥ मुरा
लि त्रि कु टा से दि जे प्रा वि दे षे ॥ मुरा ली ती ल तै ल से षाइ चं ड व द न से दि न १ का १४ वा १
॥ अथ कौतुक विंता मणौ ॥ सूर सां दूल सी मूल तां वृ त्तं सह भक्षयेत् ॥ न मु च ति न रो वी
र्यं क र्थे के न ए थ क ए थ क ॥ कौ तु क विं ता मणौ ॥ त्रि लो ह वे दितं ह त्तं क वृ ता स स्य द क्षि

रां ॥ स्वमं च धारयेद्वे त्वेकं सवरे जलं ॥ समुद्रापि न संदेहो नरे सो यैर्न बाध्यते ॥ अतः
 प्रयोगं मं च ॥ नैः प्रगये उदत्ता ॥ ककुला सपिते ते नरे व ने नां जले हरौ ॥ जलांतरं
 स्थितं सर्वे दशते मणिभूक्तं ॥ सरद वा मने त्रु मधु तैले न वां जने ॥ यां पश्यति नरे त
 मां तत्क्षणात्सा भवेत् ॥ अथेतां करं जमुलं तजले न सह घर्षयेत् ॥ विभूतां संश्रुते नित्यं ति
 लके लोकवत्पुत्र ॥ पुष्पे पुष्पं तु संयासां भराणां च प्रलेतथा ॥ विशाखां चैव शाखायां ह
 सिपत्रं तथैव च ॥ मूले मूलं समुद्रं सक्तं नम्रं तस्य तत्कृमात् ॥ पिष्टां वृष्टीं संयुक्तं कुं कुं मरे
 च न संया ॥ तिलके त्विदं संयाति यदि साक्षादहं धति ॥ इदं वाहूनि काभूतं पुष्पं तजले समु
 दरेत् ॥ कटु तैले गीनाक्षीरैः पिष्टां तजले लकीरु वं ॥ वंदनेन समायुक्तं तिलकं त्विदं संभवे

त॥ पूर्व फाल्गुनी नक्षत्रे ग्राह्या जीमवी जकं ॥ करे वषट् मवे हरे पयदिराजपुरंदरः ॥ कु
क्रवत् तस्य मुलं तु हस्तमक्षौ समुद्धरेत् ॥ १ ॥ जहारे भवेत्सूयो हस्तैश्च वा दक्षिण ॥ अक्षौ
षोऽं मृगशिरा तु नागकेशरवधृक् ॥ करवक्षो भवेद्वनपौरा जाया पृथ्वी पतिः ॥ २ ॥
थ जलसंभवं ॥ एतितस्य सिरथी तामेतन्मन्त्रि वमाचरेत् ॥ तद्वक्त्रे निक्षिपेद्विमा
जलस्यं भुजमुत्तमं ॥ बुद्धिस्तंभनं ॥ मृगीराजोऽपामार्गं वसिष्ठार्थं सहदेवीका
तुल्यं तुली वचाभेता इव मेघां समाहरेत् ॥ लोहपात्रे विनिधि पदिदिनांते समुद्धरेत् ॥
तिलकं शर्वशत्रूनां बुद्धिस्तंभनं भवेत् ॥ विषदिदमपि ॥ संजातमात्र गोवत्ससि
का मासांतरांतरं ॥ मक्षणीत्वा विंशत्वादे विदियोजयी भवेत् ॥ अथ सप्तदिवसं नं ॥ ॥

सिरीषमूलमादायुरविवांरु ७ वर्षं ॥ ५८ ॥ दकेन स मं पिष्ट्वा तलाटे तिलवेक्षते ॥ सप्तदिशे त
 धा सर्वे कृत दोषो जयी भवेत् ॥ कुमारी सरलं पिष्टुं जलीहस्तकृते भवेत् ॥ दिक्कांगारे त
 सलोहं मयुक्तानैव दत्तयेत् ॥ आषाढे नवमसु क्रौंचस्य लेपयेत् ॥ धारयेत्
 तलोहं वक्रितं ममनुत्रं ॥ कामिनी कुशुमैर्मिश्रितं खरजले वत्सया स्वल्प
 क्वरतले स्पर्शति धृतं तैलं ॥ यथेष्टं स्पर्शं न दत्तयेत् ॥ गृहदाहस्यं मनं ॥ सप्तधा कि
 ममं मंत्रं जप्ता तोये न ताडितः ॥ वक्रितं साम्पतिरैवेन दत्तं माने गृहे सति ॥ अथ मंत्रः ॥
 ओं हि मा तस्य तपो तरे भागे मरी वो मा मलक्षसः ॥ तस्य पुरिषा भण्डास्तानं स्य मया मि
 त्वा हः ॥ अथ स्त्री वत्स ॥ कपिलिं स मादाय मर्दयेद्दात्मरेतसा ॥ पूतेन सह दातव्यं
 कामिनि जन मोहने ॥ ॥ लिङ्ग मूल ॥ किं मंत्रं वित्रं यदि वृत्रं वज्रं वक्रं मंधा जल

रम.

४६

भुवः पूरणी। हेमयुक्ते शंखहा। फलेनक्षणेन कुर्यात्। कुशलप्रमाणम् ॥ आपामार्गे यवामावा
विष्वलीकृतमंजले। पिष्टाविमर्दयेनेन लिङ्गमात्ममहार्जेशं ॥ वद्वये हस्तपात्रं तु त्वलोजमु
शोभोपमम् ॥ वतहवशपाक्षोडलिङ्गमात्ममहार्जेशं ॥ अतिदीर्घस्थले मेदुजायतेनोत्र शंस
यः ॥ स्थंभम् ॥ हस्तमात्रं रवालेन सगृहात्तव वरः ॥ धारयेत्कादृशं मवीयत्थं
ममभुक्तमम् ॥ भवेत्तार्कमलिकावाते दिव्यभक्तमिदं ॥ सावभुक्तमलितदीपलावचं
वर्धितं मनेत् ॥ कस्याकनतिस्त्रेह वंधकात्तट्टहृत् ॥ अतस्तु आनयेत्तुलसीप
स्थंभमभुक्तमम् ॥ एकापामार्गमूलतुलसीमवटिनिमंत्रयेत् ॥ भोमपातसमुद्भूतकद्रावच्छाव
वीर्धयुक् ॥ अथ प्रावणम् ॥ अर्कमूलसकटं हृदि दामदने मधुः ॥ येष विज्ञेनेलोपोऽवेत्तो हृत्ती
द्रव्यं भवेत्तुलसीकवन्दनेनापिलेवेतुलिङ्गे तु तत्फलं ॥ कवीलिङ्गमन्त्रं तस्मिन् हस्त
त्रेद्वीमनेत् ॥ वृहतीफलमूलं क्षिपेत्तुलसीमणिवातिव। मधुलोचनमात्मा ॥

त्रिंशद्वेगैव श्रुतं ॥ अथ कन्या कामिनिपुयोगः ॥ सुखेन वृत्तांगलीकंदं मधुपुष्पव
 लेपयेत् ॥ नामिषो नो वदन्त्याः कन्या भवति कामिनी ॥ शिराग्निं करणं ॥ तन्निशितं शिला
 र्गं कान्तिनितेलभावितां ॥ तच्छिप्रवर्णं शिरा एतौ संहृष्टते निवर्त्तय ॥ एव कृतं मूलाचूले
 ललाटे तिलं केकले शत्रौ संहृष्टते यो जितं तस्य स्थितिर्गोतुर्क ॥ शत्रौ नृक वित्तो
 मलो ॥ तोला १ पात नदी केयलं पर्यभस्य मेगा ॥ किं नदी तिसैव वज्रावो न पश्यति ॥ तिसै
 विंश का फलं स मेत का विविलानां मफलं सुधा इत पवमानं स पावतो विषकिभाति
 लागे मरेजो हि सत्यमिति ॥ विंश का बीजमाला गणितं ॥ धारै तौ धौ किं जावो ॥
 अथ वा युसुनके ॥ चरामित्यां को समाना ३ ॥ विष तोला १ कपटं मेवाधिषमस्य कनक
 रिकेप कवे सेषमा नातिनतापि विष दुरागर्च न प्रथमदिन पच्यता बुद्धका विदुद
 यमाना गां वृत्तु ॥ दूतरे दिन कुङ्कुमा पुत्रा धे धीत लसावे ॥ ओ ॥ हा व इत नैत गां व तं स हदि

नसकीहुलगावोत्रकोहो॥अथभूलके॥त्रिकटजवनिमिंधोविज
रूनविजमूलनंकदिकनिक्काफलीछालाजाजिफललवंग११मरह
टि११इसमसुपाइदूरामिदिकपेछोगगिगाइचतसेसिउउपुमाह
गोलिवाधिक्काप्रामादेन७वा१४वा२१त्रिजनभूलजा॥चाउघाइ
भातेतोभस्मकटारहलभुनसिलदिपूरएकजागाकैषुवावेनीकोहो॥
नसिलेतोषणनिहसुकमिजिनगरदिपुवागुनिकोहो॥दोसरएतिमदि
याकेसागसिनितोतोगारेहोलपियाजुनिकोहो॥हमनपाउफुटे
काटदोलाकेछालापिसिकलगावोदिन७हमनिकोहो॥सिसन
लागपका॥दोराकोतिरहसमृतिका॥मिजितगरितपूकैअंगले

को
पगरि पुनी उवावेनी होइ ॥ उनी आ जरि केपि सी लगावेनी को हो
इ ॥ दाह लगावेनी को होइ ॥ नौ नी लगावेनी को होइ ॥ नी रं द
न के ॥ सो रा मा सा ॥ पुन ग रि जी ना कु भी डा को र स से पि पा
वेनी को होइ ॥ भ गं द र के ॥ हर उ व र डा ख उ ला सं म ग रि उ
न ग र्ने गा इ छ त से म छ से प्र व ला प्र मा न गो ली वा ध नु बा नु द
न ॥ नी को होइ ॥ सा रि सु रे तो ॥ जल का छं गि म स ग र्ने सा रि
मा ला व नु नी को हो ॥ ती ता वि डा को ज त पि सी ला व नु नी को हो ॥

७८
४८